संत जीवन को प्रभावित करते हैं : युवाचार्य महाश्रमण

लाडनूं 1 अक्टूबर।

''युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि जो संत होता है वह दूसरों के जीवन को प्रकासित करता है व्यक्ति जितना त्याग का, संयम का जीवन जीता है वह उतना ही वह अपने जीवन से अंधकार को दूर करता है।''

वे जैन वि-व भारती स्थित सुधर्मा सभा में आयोजित धर्मसभा को संबोधित कर रहे थे।

युवाचार्यवर ने कहा कि ब्रह्म मूहर्त का समय सबसे उत्तम होता है जो इस समय जागृत होता है वह अपनी दिनचर्या को व्यवस्थित करता है और जीवन में ज्ञान का प्रका-ा प्राप्त करता है। जिसका सूर्य स्वागत करता है वह उत्तम समय को खो देता है, इसलिए व्यक्ति को समय का मूल्यांकन करना चाहिए। समय का सम्यक् उपभोग करने वाला अपने जीवन को उत्तम बना लेता है।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि भोग जीवन में थोड़े समय के लिए सुख की अनुभूति कराने वाला होता है, उसके बाद दुःख का कारण बन जाता है। संत व्यक्ति को इस दुःख से मुक्ति का मार्ग बताते हैं और असंयम से संयम की ओर बढ़ने की प्रेरणा देते हैं